1957B Effect of upbringing

In *Anekant* February 1957

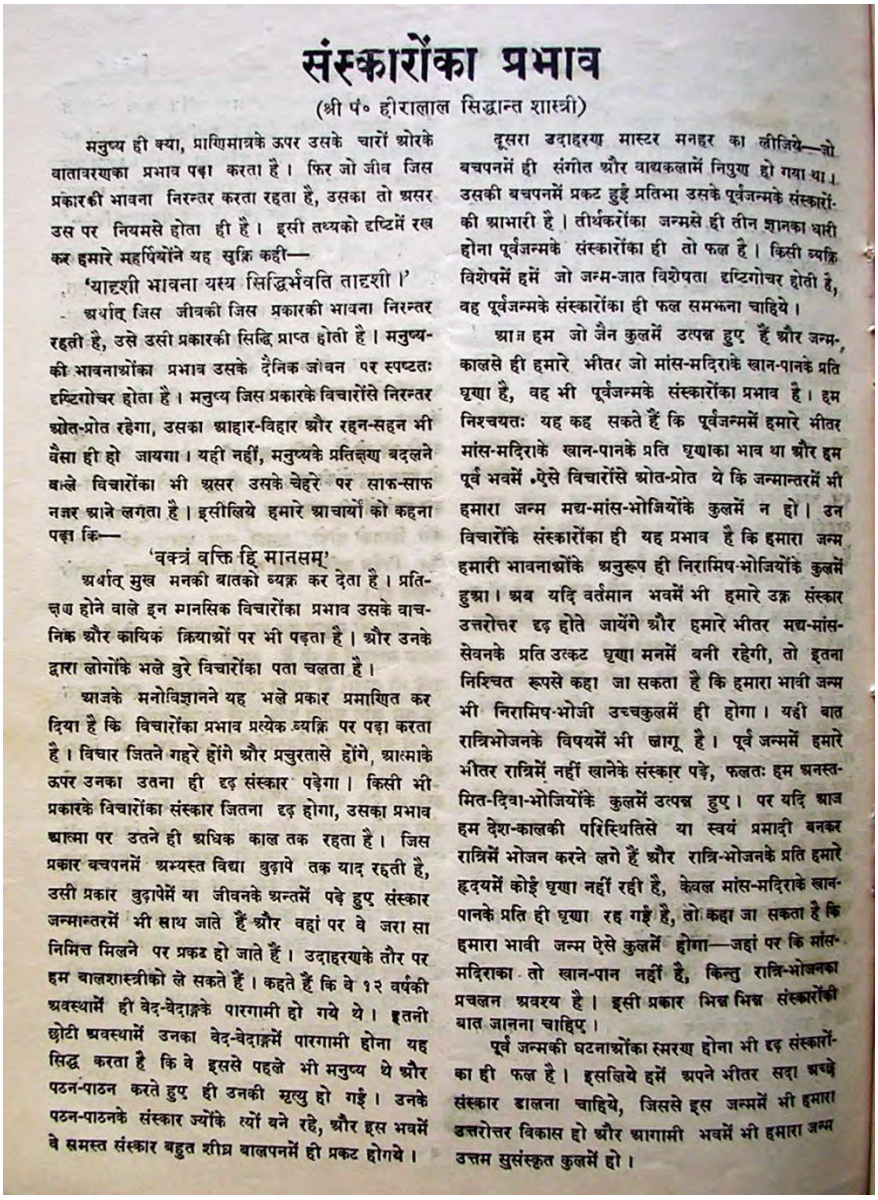

संस्कारोंका प्रभाव

(श्री पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री)

मनुष्य ही क्या, प्राणिमात्रके ऊपर उसके चारों ओरके वातावरणका प्रभाव पड़ा करता है। फिर जो जीव जिस प्रकारकी भावना निरन्तर करता रहता है, उसका तो असर उस पर नियमसे होता ही है। इसी तथ्यको दृष्टिमें रख कर हमारे महर्षियोंने यह सूक्ति कही—

'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।'

अर्थात् जिस जीवकी जिस प्रकारकी भावना निरन्तर रहती है, उसे उसी प्रकारकी सिद्धि प्राप्त होती है। मनुष्यकी भावनाओंका प्रभाव उसके दैनिक जीवन पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। मनुष्य जिस प्रकारके विचारोंसे निरन्तर ओत-प्रोत रहेगा, उसका आहार-विहार और रहन-सहन भी वैसा ही हो जायगा। यही नहीं, मनुष्यके प्रतिक्षण बदलने वाले विचारोंका भी असर उसके चेहरे पर साफ-साफ नजर आने लगता है। इसीलिये हमारे आचार्यों को कहना पड़ा कि—

'वक्त्रं वक्ति हि मानसम्'

अर्थात् मुख मनकी बातको व्यक्त कर देता है। प्रतिक्षण होने वाले इन मानसिक विचारोंका प्रभाव उसके वाचनिक और कायिक क्रियाओं पर भी पड़ता है। और उनके द्वारा लोगोंके भले बुरे विचारोंका पता चलता है।

आजके मनोविज्ञानने यह भले प्रकार प्रमाणित कर दिया है कि विचारोंका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ा करता है। विचार जितने गहरे होंगे और प्रचुरतासे होंगे, आत्माके ऊपर उनका उतना ही दृढ़ संस्कार पड़ेगा। किसी भी प्रकारके विचारोंका संस्कार जितना दृढ़ होगा, उसका प्रभाव आत्मा पर उतने ही अधिक काल तक रहता है। जिस प्रकार बचपनमें अभ्यस्त विद्या बुढ़ापे तक याद रहती है, उसी प्रकार बुढ़ापेमें या जीवनके अन्तमें पड़े हुए संस्कार जन्मान्तरमें भी साथ जाते हैं और वहां पर वे जरा सा निमित्त मिलने पर प्रकट हो जाते हैं। उदाहरणके तौर पर हम बालशास्त्रीको ले सकते हैं। कहते हैं कि वे १२ वर्षकी अवस्थामें ही वेद-वेदाङ्गके पारगामी हो गये थे। इतनी छोटी अवस्थामें उनका वेद-वेदाङ्गमें पारगामी होना यह सिद्ध करता है कि वे इससे पहले भी मनुष्य थे और पठन-पाठन करते हुए ही उनकी मृत्यु हो गई। उनके पठन-पाठनके संस्कार ज्योंके त्यों बने रहे, और इस भवमें वे समस्त संस्कार बहुत शीघ्र बालपनमें ही प्रकट होगये।

दूसरा उदाहरण मास्टर मनहर का लीजिये—जो बचपनमें ही संगीत और वाद्यकलामें निपुण हो गया था। उसकी बचपनमें प्रकट हुई प्रतिभा उसके पूर्वजन्मके संस्कारोंकी आभारी है। तीर्थंकरोंका जन्मसे ही तीन ज्ञानका धारी होना पूर्वजन्मके संस्कारोंका ही तो फल है। किसी व्यक्ति विशेषमें हमें जो जन्म-जात विशेषता दृष्टिगोचर होती है, वह पूर्वजन्मके संस्कारोंका ही फल समझना चाहिये।

आज हम जो जैन कुलमें उत्पन्न हुए हैं और जन्म-कालसे ही हमारे भीतर जो मांस-मदिराके खान-पानके प्रति घृणा है, वह भी पूर्वजन्मके संस्कारोंका प्रभाव है। हम निश्चयतः यह कह सकते हैं कि पूर्वजन्ममें हमारे भीतर मांस-मदिराके खान-पानके प्रति घृणाका भाव था और हम पूर्व भवमें ऐसे विचारोंसे ओत-प्रोत थे कि जन्मान्तरमें भी हमारा जन्म मद्य-मांस-भोजियोंके कुलमें न हो। उन विचारोंके संस्कारोंका ही यह प्रभाव है कि हमारा जन्म हमारी भावनाओंके अनुरूप ही निरामिष-भोजियोंके कुलमें हुआ। अब यदि वर्तमान भवमें भी हमारे उक्त संस्कार उत्तरोत्तर दृढ़ होते जायेंगे और हमारे भीतर मद्य-मांस-सेवनके प्रति उत्कट घृणा मनमें बनी रहेगी, तो इतना निश्चित रूपसे कहा जा सकता है कि हमारा भावी जन्म भी निरामिष-भोजी उच्चकुलमें ही होगा। यही बात रात्रिभोजनके विषयमें भी लागू है। पूर्व जन्ममें हमारे भीतर रात्रिमें नहीं खानेके संस्कार पड़े, फलतः हम अनस्तमित-दिवा-भोजियोंके कुलमें उत्पन्न हुए। पर यदि आज हम देश-कालकी परिस्थितिसे या स्वयं प्रमादी बनकर रात्रिमें भोजन करने लगे हैं और रात्रि-भोजनके प्रति हमारे हृदयमें कोई घृणा नहीं रही है, केवल मांस-मदिराके खान-पानके प्रति ही घृणा रह गई है, तो कहा जा सकता है कि हमारा भावी जन्म ऐसे कुलमें होगा—जहां पर कि मांस-मदिराका तो खान-पान नहीं है, किन्तु रात्रि-भोजनका प्रचलन अवश्य है। इसी प्रकार भिन्न भिन्न संस्कारोंकी बात जानना चाहिए।

पूर्व जन्मकी घटनाओंका स्मरण होना भी दृढ़ संस्कारोंका ही फल है। इसलिये हमें अपने भीतर सदा अच्छे संस्कार डालना चाहिये, जिससे इस जन्ममें भी हमारा उत्तरोत्तर विकास हो और आगामी भवमें भी हमारा जन्म उत्तम सुसंस्कृत कुलमें हो।

Effect of upbringing written in 1935

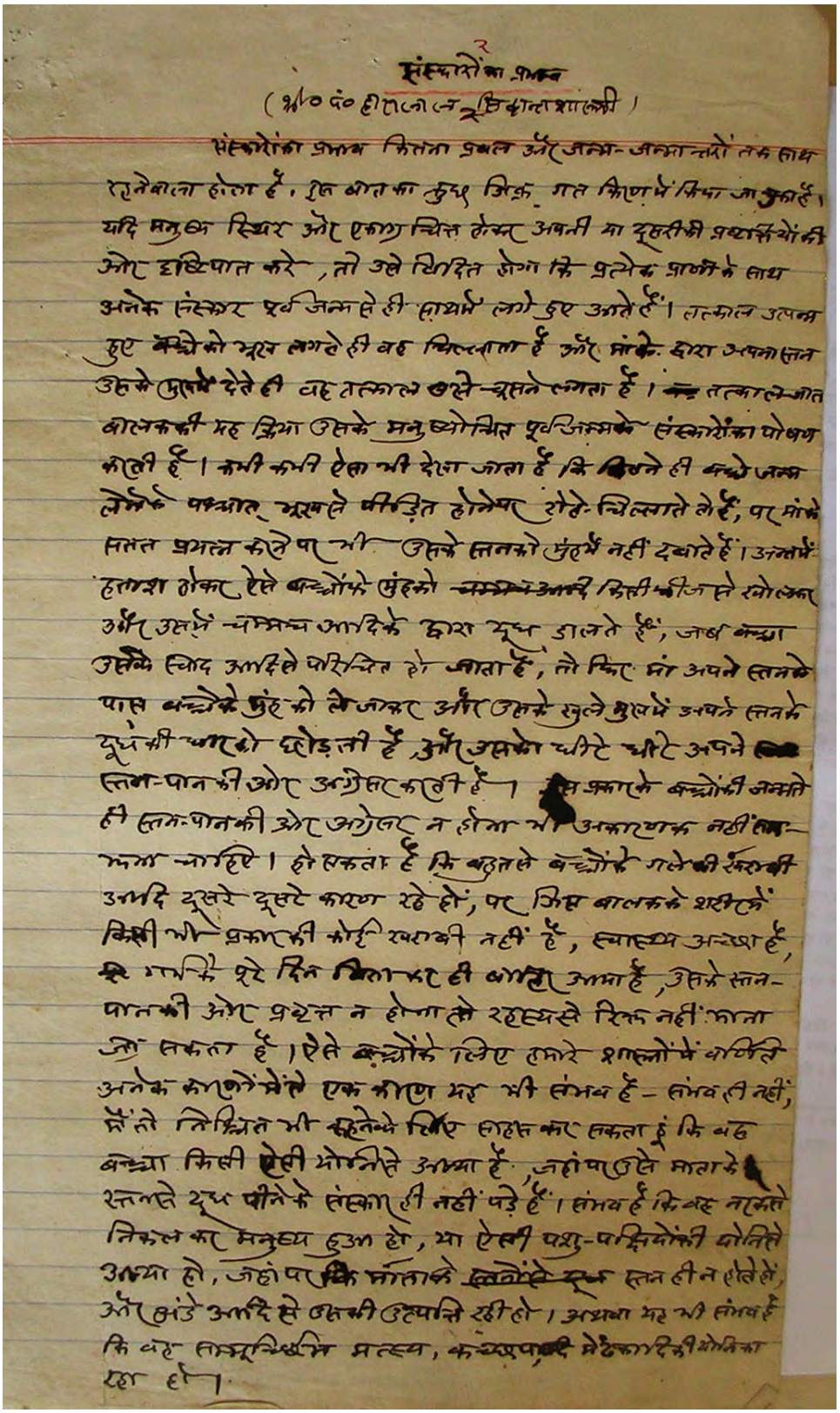

संस्कारोंका प्रभाव

(श्री० पं० हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री)

संस्कारोंका प्रभाव कितना प्रबल और जन्म-जन्मान्तरों तक साथ रहनेवाला होता है, इस बातका कुछ जिक्र गत किरणमें किया जा चुका है। यदि मनुष्य स्थिर और एकाग्र चित्त होकर अपनी या दूसरोंकी प्रवृत्तियोंकी ओर दृष्टिपात करे, तो उसे विदित होगा कि प्रत्येक प्राणीके साथ अनेक संस्कार पूर्वजन्मसे ही साथमें लगे हुए आते हैं। तत्काल उत्पन्न हुए बच्चेको भूख लगते ही वह चिल्लाता है और मांके द्वारा अपना स्तन उसके मुखमें देते ही वह तत्काल उसे चूसने लगता है। तत्कालजात बालककी यह क्रिया उसके मनुष्योचित पूर्वजन्मके संस्कारोंका पोषण करती है। कभी कभी ऐसा भी देखा जाता है कि कितने ही बच्चे जन्म लेनेके पश्चात् भूखसे पीड़ित होनेपर रोते-चिल्लाते तो हैं, पर मांके सतत प्रयत्न करनेपर भी उसके स्तनको मुंहमें नहीं दबाते हैं। अन्तमें हताश होकर ऐसे बच्चोंके मुंहको किसी चीजसे खोलकर और उसमें चम्मच आदिके द्वारा दूध डालते हैं, जब बच्चा उसके स्वाद आदिसे परिचित हो जाता है, तो फिर मां अपने स्तनके पास बच्चेके मुंहको ले जाकर और उसके खुले मुखमें अपने स्तनके दूधकी धारको छोड़ती है, और उसको धीरे धीरे अपने स्तन-पानकी ओर आकर्षित करती है। इस प्रकारके बच्चोंकी जन्मते ही स्तन-पानकी ओर आकर्षण न होना भी अकारणक नहीं समझना चाहिए। हो सकता है कि बहुतसे बच्चोंके गलेकी खराबी आदि दूसरे दूसरे कारण रहे हों, पर जिस बालकके शरीरमें किसी भी प्रकारकी कोई खराबी नहीं है, स्वास्थ्य अच्छा है, गर्भके पूरे दिन बिता कर ही बाहर आया है, उसके स्तन-पानकी ओर प्रवृत्त न होना तो रहस्यसे रिक्त नहीं माना जा सकता है। ऐसे बच्चोंके लिए हमारे शास्त्रोंमें वर्णित अनेक कारणोंमेंसे एक कारण यह भी संभव है — संभव ही नहीं, मैं तो निश्चित भी कहनेके लिए साहस कर सकता हूं कि वह बच्चा किसी ऐसी योनिसे आया है, जहां पर उसे माताके स्तनसे दूध पीनेके संस्कार ही नहीं पड़े हैं। संभव है कि वह नरकसे निकल कर मनुष्य हुआ हो, या ऐसी पशु-पक्षियोंकी योनिसे आया हो, जहां पर माताके स्तन ही न होते हों, और अंडे आदिसे उनकी उत्पत्ति रही हो। अथवा यह भी संभव है कि वह सम्मूर्च्छिम मत्स्य, कच्छप, मेंढकादिकी योनिका रहा हो।

इसी प्रकार यदि कोई शिशु जन्म लेनेके पश्चात भूख होनेपर रोनेके बजाय अपने हाथ या पैरके अंगूठेको मुंहमें देकर चूसने लगता है, तो समझना चाहिए कि वह उच्च योनिसे आया है। देखनेमें ये बातें बहुत छोटी सी प्रतीत होती हैं, पर उनके भीतर उपयुक्त कुछ रहस्य छिपा रहता है। जिन्होंने शास्त्रोंका स्वाध्याय किया है, वे जानते हैं कि उनमें स्वर्ग और नरकसे आकर मनुष्योंमें जन्म लेने वाले जीवोंके भी चिन्ह, लक्षण आदिका निरूपण किया गया है।

पुराने संस्कारोंका एक ताजा उदाहरण लीजिए। २५ दिसम्बर सन् ५६ के नवभारत टाइम्स में निम्न-लिखित समाचार प्रकाशित हुआ है—

"रोम २४ दिसम्बर। समाचार है कि इटालियन ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन-का कार्यालय भूत-ग्रस्त हो गया है। लोगोंका कहना है - यह भूत प्रातः और सायं लगभग तीन बजे सीढ़ियों परसे उतरकर घूमता है। एक पहरेदार, जिसने इस भूतको देखा, भयभीत हो गया है। उक्त पहरेदारको भूतकी प्रामाणिकता पर पूरा भरोसा हो गया है। कुछ लोगोंका विश्वास है कि यह 'नीरो' है। कुछ लोगोंका यह भी कथन है कि यह एक मेहमान था, जिसकी मृत्यु १०० वर्ष पूर्व होटलमें हो गई थी। अब यह होटल आई.बी.सी.के कार्यालयमें तबदील हो गया है।"

[illegible]

उक्त घटना असत्य नहीं है। हां, उसमें कल्पित व्यक्ति असत्य हो सकता है। पर इतना तो निश्चित ही समझना चाहिए कि जिस व्यक्तिके संस्कार उस होटलके प्रति पूर्वजन्ममें अधिक मोह-ममता-मय रहे हैं, वही मरकर और भूतयोनिमें जन्म लेकर पुराने संस्कारोंसे प्रेरित होकर होटलमें चक्कर लगा रहा है।

अभी मास पूर्व जैन पत्रोंमें एक समाचार छपा था कि अमुक मुनिराज - जो कुछ दिन पूर्व सम्मेदशिखरजीकी वन्दना करनेके भाव रखते हुए समाधिमरणको प्राप्त हुए थे, वे सम्मेदशिखरजी पर यात्रियोंके द्वारा ध्यानस्थ देखे गये हैं। ज्ञात होता है कि उनकी आत्मामें शिखरजीकी वन्दनाके संस्कार घर कर गये। मरकर वे देव हुए और अपने पूर्व-जन्मोपार्जित संस्कारसे प्रेरित होकर तीर्थराजकी वन्दनार्थ आये हों, और उन्हीं संस्कारोंके कारण मुनिका पूर्व वेष रखकर ध्यानावस्थित रहते हुए गिरिराजपर दृष्टिगोचर हुए हों।

उपर्युक्त दोनों घटनाएं पूर्वजन्मके संस्कारोंके ज्वलन्त दृष्टान्त हैं और वे यह प्रकट करती हैं कि प्राणी जैसे संस्कार लेकर मरता है, वे संस्कार आगामी पर्यायमें प्रकट होते हैं।

—०—